रात्रिक्लास 31.3.68 ओमशान्ति

बापदादा ने एक प्रश्न कमरे में महारथियों से पूछा कि तुम शरीर छोड़ने लिए तैयार हो?(सभी ने कहा इस समय की कमाई पूरी कर शरीर छोड़ें तो अच्छा है।) बाप दादा कहे ठीक है। फिर यह प्रश्न क्लास में चल रहा (था) तो बाप दादा आकर पधारेः– पुरुषार्थ कर रहे हैं। जो एमऑब्जेक्ट है वह पूरी कर शरीर छोड़ें तो अच्छा है। बच्चे जानते हैं वर्सा पाना है। हम यह वर्सा पा रहे हैं। यह है गॉड फादरली वर्थ राइट। बाप से तो यह वर्सा ही मिलेगा। ऐसी–2 बातें कोई साधु, संत, आदि नहीं कर सकते। तुम्हारी बुद्धि में है हम स्कूल में पढ़ रहे हैं। हम विश्व का मालिक बनने वाले हैं। विश्व का मालिक बाप बिगर कोई बना न सके। खुद बाप ही ऐसी सौगात देते हैं। सौगात भी नहीं कहेंगे। राजयोग की पढ़ाई पढ़ाने ही आते हैं। तुम समझा सकते हो संगम पर

31.3.68 2

..... राजयोग की पढ़ाई का यह फल है। यह हैं उत्तम ते उत्तम पुरुष सभी से। ऐसे उत्तम ते उत्तम पद बाप ही प्राप्त कराते हैं। जो ऊँच ते ऊँच भगवान है उनसे ही यह स्वर्ग की बादशाही मिलती है। यह तो बच्चों को निश्चय है। सिर्फ सुमिरण न कारण खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। बाप आते ही हैं यह वर्सा देने। देवी–देवताओं का राज्य स्थापन करने आते हैं। यह स्मृति में आने से बच्चों को खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। तब तो कहते हैं सम्पूर्ण बन कर जावें। तो खातरी भी हो जाये। बच्चे जानते हैं बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। भाषण में भी यह समझाओ गीता पाठशाला में हम राजयोग की शिक्षा पा रहे हैं भगवान से। कृष्ण से नहीं। भगवान से। भगवान ही ज्ञान का सागर हैं। आकर पढ़ाते हैं । ज्ञान का सागर निराकार है। साकार ज्ञान का सागर हो न सके। बाप की ही स्थाई महिमा है। परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है। वह निराकार है। ज्ञान का सागर ही हमको राजयोग सिखलाते हैं। पढ़ाई से ही विश्व की राजाई देते हैं। यह है ही राजयोग की पढ़ाई। मुख्य बात है याद की। जब समय नज़दीक आवेगा तो कल्प पहले मिसल नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार कर्मातीत अवस्था को पावेंगे ज़रूर। जो पुरुषार्थ करते हैं वही पावेंगे। जो पुरुषार्थ ही नहीं करते वह पा न सके। जीवात्मा को सन्यास करना पड़ता है घर जाने लिए। सन्यास कराने वाला है बाप। बेहद का बाप बेहद का सन्यास करते हैं। अभी है संगम। थोड़ा भी किसको समझाया जाये हम बेहद का सन्यास करते हैं, पुरानी दुनियां भूल नई दुनियां को याद करते हैं। इतनी सहज बात भी बुद्धि में क्यों नहीं बैठती? इतने पत्थर बुद्धि हैं। जब समझाया जाता है तो क्यों नहीं समझते हैं? और तो कोई ऐसे समझाते ही नहीं। तुम समझाते हो राजाई कैसे मिल सकती है। तुम ही कहते हो इस समय इस राजयोग की पढ़ाई से यह राजाई मिलती है। स्थापना होती है बाकी सभी विनाश हो जावेंगे। गीता में भी यह बातें हैं। यह है ड्रामा। ड्रामा के प्लैन अनुसार तुम अपनी राजधानी ज़रूर स्थापन करेंगे। बाकी मेहनत समझाने की है। मुख से समझाना होता है। तुम्हारे मुख से अमृत टपकता है। अमृत पीने वाले ही अमर बनते हैं। अमृत पीने से देवता भी बनते हैं। यह भी गायन है। बच्चे जानते हैं स्थापना होनी है। मेहनत से जितना वर्सा लिया था वहीं लेते रहते हैं। तुम देखते रहते हो। विघ्न भी पड़नी है। वह भी देखते हो। किस कारण कैसे–2 विघ्न पड़ते हैं। बाप ने कहा है माया के विघ्न बहुत पड़ेंगे। न चाहते भी फालतू खयालात बुद्धि में आती है। मनुष्यों को कशिश भी बहुत होती है। देखते हुये कोई भी इच्छा न हो, समझ जावे हम भाई–2 हैं। हम भाइयों को जाना है बाप के डायरैक्शन अनुसार। पवित्र बनना तो अच्छा ही है। यह भी प्रैक्टिस करनी है। देह सहित दुनियां का जो कुछ देखने में आता है, बाप कहते हैं देखते हुये कुछ भी न देखो। बाप को और घर को और वर्से को याद करो। मेहनत तो करनी पड़े। भगवान पढ़ाते हैं। भगवान भगवान बनाते हैं। मूल बात है याद की; इसलिए प्राचीन योग का बहुत मान है।

बच्चों को खातरी होनी, विघ्नों आदि को कोई प्रवाह(परवाह)नहीं। तुम सर्विस करते रहो। राजाई ज़रूर स्थापन होनी ही है। तो अन्दर में उत्साह रहता है ना। बाकी टाइम वेस्ट भी न करना चाहिए। सर्विस का ही ध्यान रहना चाहिए। सर्विस अच्छी चल रही है। ठंढाई देखी जाती है तो सावधान किया जाता है। पतरा सभी को देते रहो। पवित्र रहने की भी युक्ति बतलानी पड़ती है। यह गीता के अ(क्ष)र बहुत अच्छे हैं। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम जगत जीत बन जावेंगे। अन्दर में ज्ञान टपकता है। आवाज़ नहीं निकलता। समझा जाता है हम याद से सतोप्रधान बन जावेंगे। फिर जाकर राजाई करेंगे। पढ़ाने वाला है बाप। उनकी बुद्धि में कब नहीं आवेगा कोई से पैसा मांगे। न बच्चों को कहेंगे कि मांगो। दाता है ना। कहां भी मांगना अच्छा नहीं। सहज मिले तो दूध बराबर खैंच लिया सो रक्त बराबर। बच्चों को डायरैक्शन है ट्रायल कर देखो। कोई से कुछ न मांगो। बाप तो बैठा है ना। बीती सो बीती देखो। और बातों को छोड़ो। अभी डायरैक्शन मिलती है कब भी कोई से मांगो नहीं। शुरूआत में तुम बच्चों के लिए यही खयालात रहता था कुछ मांगे नहीं। आपे ही दिया जाये। वा पूछ सकते हैं। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट। रूहानी बच्चों को नमस्ते।